लोकभाषा का स्वरूप

प्रो0 पवन अग्रवाल

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

2020

प्रस्तावना

लोकभाषा से तात्पर्य उस भाषा से है जो लोक मानस द्वारा निर्मित है और लोक प्रवृत्ति के अनुरूप ढलती रही है। इसकी कोई वैयाकरणिक, निरूक्ति या उत्पत्ति सिद्ध नहीं की जा सकती केवल लोकमानस में उसे ढूंढा जा सकता है। लोकभाषा के अन्तर्गत देशज शब्दों के अतिरिक्त तद्भव शब्द भी आते हैं क्योंकि इनके निर्माण में लोक प्रवृत्ति ही कार्य करती है जैसे- अंग्रेजी का 'लार्ड' शब्द लोक में आकर घिसते-घिसते 'लाट' बन गया। लोकभाषा में निम्नलिखित प्रकार की शब्दावली प्राप्त होती हैं।

1. नामवाची शब्दावली–

लोकभाषा में नामवाची शब्दावली का विशेष महत्व है क्योंकि इनके मूल में लोक जीवन के अनेक लोक विश्वास संयुक्त हैं। इन नामवाची शब्दों के अध्ययन से एक विशेष प्रदेश की संस्कृति और शब्द निर्माण की प्रवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है। जैसे कि ननकू या ननकउ़ नाम घर में छोटे बच्चे का होता है और बड़े का बड़कऊ। कल्लू बालक के काले होने पर रखा जाता है तो गुड़िया, कोमल और सुन्दरता के आधार पर।

इसी प्रकार हजारीलाल (हजार रूपये के लिए), माणिकचंद, राम भरोसे, गुरूबख्श आदि। कुछ नाम विकृत होकर प्रचलित हैं जैसे- कृष्ण-किशन और कन्हैया, इंद्राणी का इन्दरानी, गणेश को गनेश, ब्रह्मा को बरहमा।

2. देशज शब्दावली–

लोकभाषा में सबसे अधिक महत्व देशज शब्दावली का होता है क्योंकि यह लोक की निजी सम्पत्ति है और इसका व्यवहार तत्सम-तद्भव की अपेक्षा अधिक होता है। यह देशज शब्द कहीं पारिवारिक वातावरण से सम्बन्ध रखते हैं तो कहीं संस्कार, त्यौहार या व्यवसाय से। देशज शब्दों की निर्माण प्रवृत्ति के आधार पर उनकी विशेषताएँ निम्नवत् देखी जा सकती हैं-

(i) ध्वन्यात्मक–

यह लोकभाषा के सबसे प्राचीन शब्द हैं। सबसे पहले मानव ने इन्हीं शब्दों द्वारा अपने भावों को अभिव्यक्त किया होगा। भाषा विज्ञान के इन शब्दों को 'डिंग-डांग सिद्धान्त' के अन्तर्गत रखते हैं। इस सिद्धान्तानुसार विभिन्न ध्वनियों को सुनकर उन्हीं ध्वनियों के आधार पर इन शब्दों का निर्माण हुआ होगा। जैसे- खनकार, हहरात, अरराहर, सन सन आदि।

(ii) मनोभावाव्यक्ति मूलक शब्द–

मनोविज्ञान का सामान्य सिद्धान्त है कि विभिन्न संवेगों तथा स्थितियों में मानव अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए विशेष मनोभावाव्यक्ति मूलक शब्दों का उच्चारण करता है।

जैसे–

- घृणात्मक अभिव्यक्ति के लिए– छिः छिः
- शोक भावना के लिए– हाय! हाय!
- प्रसन्नता के लिए– वाह।वाह। आदि।

(iii) अनुकरणात्क शब्द–

अनुकरणात्मक शब्द भाषा की आदिम अवस्था की भाषा है। भाषा वैज्ञानिकों का मत है कि विषयों तथा वस्तुओं का नामकरण उनके द्वारा उत्पन्न की जाने वाली ध्वनि के आधार पर ही रखा गया है।

जैसे–

- कू–कूह –कुक्कू
- पी–पी –पपीहा

(iv) प्रतिध्वनि शब्द (द्वित्वमूलक)–

लोकभाषाओं के द्वित्व रूप अर्थात् एक दूसरे से मिलते जुलते शब्दों का प्रयोग होता है। द्वित्व रूप दो प्रकार के होते हैं। पहला जिसके शब्दों का अर्थ निकलता है।

जैसे- लाठी-डंडा, रूपया-पैसा, रोटी-पानी।

दूसरे वह जिसमें प्रथम अर्थ बोधक होता है किन्तु दूसरा निरर्थक जैसे- रेल-पेल, धक्का-मुक्का, चूर-मूर, भीड़-भड़क्का, बेंच-बांच आदि।

प्रयोग के कारण

(i) अपेक्षा की दृष्टि– लोटा-वोटा, रेल-पेल।

(ii) सरलीकरण की प्रवृत्ति– अगड़म-बगड़म।

(iii) भाव विशेष पर बल देने के लिए– मड़त-घुमड़त।

3. तद्भव शब्द–

तद्भव शब्द वह शब्द हैं जो तत्सम् (संस्कृत, पाली, प्राकृत) के बिगड़े हुए रूप हैं।

जैसे–

ब्रह्मा - बरमहा

पक्ष - पच्छ

शिक्षा दीक्षा - शिच्छा-दिच्छा

4. विदेशज शब्दों का भी लोक ने देशीकरण कर दिया है जैसे-

अंग्रेजी शब्द			अरबी–फारसी शब्द		
टिकट	-	टिकस, टिक्कस	नाहक	-	नहक
डॉक्टर	-	डाकतर	होश	-	होस
कलेक्टर	-	कलक्टर	कानून	-	कनून
कोहट	-	कोरह	शिकारी	-	सिकारी

5. लोकोक्ति, मुहावरें भी लोकभाषा का आधार है।

धन्यवाद